TELANGANA STATE PUBLIC SERVICE COMMISSION

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name :	28 Paper Code Hindi 21st May 2022 Shift 2
Subject Name :	28 Paper Code Hindi
Duration :	180
Total Marks :	100
Display Marks:	No
Calculator :	Normal
Magnifying Glass Required? :	No
Ruler Required? :	No
Eraser Required? :	No
Scratch Pad Required? :	No
Rough Sketch/Notepad Required? :	No
Protractor Required? :	No
Show Watermark on Console? :	Yes
Highlighter :	No
Auto Save on Console?	Yes
Change Font Color :	No
Change Background Color :	No
Change Theme :	No
Help Button :	No
Show Reports :	No
Show Progress Bar :	No

28 Paper Code Hindi

Group Number :	1
Group Id :	881891488
Group Maximum Duration :	0
Group Minimum Duration :	180
Show Attended Group? :	No
Edit Attended Group? :	No
Break time :	0
Group Marks :	100
Is this Group for Examiner? :	No
Examiner permission :	Cant View
Show Progress Bar? :	No
Revisit allowed for group Instructions? :	No
Maximum Instruction Time :	0
Minimum Instruction Time :	0
Group Time In :	Minutes
Navigate To Group Summary From Last Question? :	No
Disable Submit Button During Assessment? :	No

28 Paper Code Hindi

Section Id :	881891488
Section Number :	1

Section type :	Offline
Mandatory or Optional :	Mandatory
Number of Questions :	1
Number of Questions to be attempted :	1
Section Marks :	100
Display Number Panel :	Yes
Group All Questions :	No
Enable Mark as Answered Mark for Review and Clear Response :	Yes
Maximum Instruction Time :	0
Section Instructions :	
English : Absolute	
Sub-Section Number :	1
Sub-Section Id :	881891488

Question Number : 1 Question Id : 88189140088 Question Type : SUBJECTIVE Consider As Subjective : Yes Calculator : None Response Time : N.A Think Time : N.A Minimum Instruction Time : 0

Correct Marks : 100

Total No. of Questions: 8

028-H

May - 2022
The Translation Test, Paper - II, Hindi
Lower Standard Written Examination
Translation from Hindi into English
(Without Books)

Time: 3 Hours ***Marks: 100***

Note: 1) *Candidate should attempt six Questions subject to alternatives or limitations, if any mentioned herein, or in each question. If more are answered, the last extra answers will be ignored.*

2) Parts of the same question must be answered together and must not be interposed other question(s).

3) Authorities should be quoted in support of the answers.

4) Question No. 1 is compulsory.

5) Candidate should answer the paper in English only, except language Test or Surveyors Test, which should be answered in the language chosen only. In case of non-compliance, such Answer Script shall be invalidated.

1. **ईसा** की आरंभिक शताब्दियों में भारत में विज्ञान की प्रगति आशामय ढंग से हो रही थी । चौथी तथा पांचवी शताब्दी में गणित, ज्योतिष, प्राकृतिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में काफी उन्नति हो चुकी थी । आर्यभट्ट उस युग के महानतम गणितज्ञ थे । उन्होंने शून्य तथा दशमलव पद्धति को सबसे पहले जाना और उसका प्रयोग किया था । इसके अतिरिक्त वर्गमूल, घनमूल और वर्ग समीकरणों को हल करना भी वे बहुत अच्छी तरह जानते थे । विदेशी विद्वान प्रोफेसर प्लेफेयर का मत है कि ईसा से 3000 वर्ष पहले भी भारतीयों को बीजगणित एवं ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त था । सबसे चमत्कारिक बात जो भारतीयों को ज्ञात थी, वह थी ग्रहों की स्थिति और उनकी गति का ज्ञान । यह सब वे किस प्रकार जानते थे, यह एक अचंभे की बात है, क्योंकि उस समय तक किसी बड़ी दूरबीन का आविष्कार नहीं हुआ था । वराहमिहिर उस समय के प्रतिभाशाली गणितज्ञ थे । इन्होंने खगोल विद्या पर भी कई सर्वथा मौलिक प्रणालियों का विकास किया था । सुप्रसिद्ध इतिहासकार राधा कुमुद मुकर्जी का मत है कि वराहमिहिर गुप्तकाल के न्यूटन थे । उन्हे सब प्रकार की विद्याओं और कलाओं का प्रगाढ़ ज्ञान था, जैसे-वनस्पति शास्त्र, खगोल शस्त्र, धातु शोधन विद्या, नागरिक इंजनीयरिंग आदि । उनकी रची पुस्तक 'बृहत संहिता' विज्ञान एवं कला का विश्वकोश है ।

प्रतिभाशाली = Brilliant [20]

2. मूल्य वृद्धि के कई कारण हैं । आज प्रत्येक उत्पादक अपने उत्पाद के द्वारा अधिक-से-अधिक लाभ कमाना चाहता है । उसकी इस स्वार्थ एवं संकीर्ण भावनाओ ने ही मूल्य वृद्धि को जन्म दिया है । सरकार का इन उत्पादकों, व्यापारियों पर कोई नियंत्रण नहीं है । भारत सरकार ने अपनी योजना के चक्कर में आकार धड़ाधड़ नोट छापे उपयोग सामग्री का उत्पादन तो बढ़ा नहीं पर नोट बढ़ते गए । इसी कारण मुद्रा प्रसार हुआ ।

स्वार्थी = *Selfish* [16]

3. ' सादा जीवन उच्च विचार ' इस सूक्ति को प्रत्येक व्यक्ति ने अपने जीवन में सुना अवश्य होता है, लेकिन विरले ही होते है जिन्होंने इसे आचरण में उतारा होगा यद्यपि इसका सामान्य अर्थ यही है कि इंसान को जीवन में आडंबर का त्याग करके अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को यथासंभव कम रखते हुए अपने विचारों श्रेष्टतम एवं उच्चतर रखना चाहिए ।

आडंबर = Pomp [16]

4. मनुष्य अपने श्रेष्ठ कर्म से प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सकता है । सृष्टि के अनेक गूढ़ रहस्यों को सुलझा सकता है; परंतु कुछ ऐसी भी चीजें हैं जिन पर मनुष्य का कोयी वश नहीं चलता जैसे जीवन - मरण ईश्वर के हाथ में ही हैं उसी प्रकार हानि - लाभ, यश - अपयश भी विधि के हाथ में है । इस पर मनुष्य का कोयी वश नहीं । अतः इनपर विचार करके निराशा होने से उत्तम है अपना कार्य पूरी निष्ठा से सम्पन्न करना ।

अपयश = Failure [16]

5. यदि इतिहास से उदाहरण लिए जाएं तो एकलव्य ने गुरू के बिना महज अभ्यास मात्र से ही धनुर्विद्या में महारत हासिल की थी । कालिदास भी पहले वज्र मूर्ख कहे जाते थे किन्तु अभ्यास की चेतना पर आरूढ़ होकर वे महान नाटककारों की कतार में सम्मिलित हो गए । महर्षि वाल्मिकी पहले डाकू हुआ करते थे किन्तु आत्मजागृति के पश्चात् विद्या अभ्यास से आदि-कवि के रूप में प्रतिष्ठित हो गए । अब्राहम लिंकन को अनेक चुनावों में पराजय का सामना करना पड़ा था लेकिन एक दिन वे अमरीका के राष्ट्रपति बनने में सफल हो गए ।

आत्मजागृति = Self-awareness [16]

6. संत कबीर को समाज सुधारक कवि की संज्ञा प्राप्त है । अपने नीति कथन रूपी दोहों के रूप में उन्होंने शीर्षक को विस्तारित दोहे के रूप में यूं प्रदर्शित किया था कि दोहे का सरल संदेश यही है कि जो तुम्हारे लिए कांटा बोता है, उसके लिए तुम फूल बोओ, अर्थात् जो तुम्हारी बुरायी करता है तुम उसकी भलाई करो । तुम्हें फूल बोने के कारण फूल मिलेंगे और जो कांटे बोता है उसे कांटे मिलेंगे । सार यही है कि नेकी के बदले नेकी और बदी के बदले बदी ही प्राप्त होती है । यही प्रकृति और सृष्टि का नियम भी है ।

सृष्टि = Creation [16]

7. सभी दिन एक एक प्रकार के नहीं होते हैं । किन्तु इसका भावार्थ अनेकानेक अर्थों को समेटे हुए हैं । यहां 'सबै दिन से आशय है, जीवन का सम्पूर्ण समय । जबकि 'जात न एक समान ' का अर्थ एक ही रूप में व्यतीत न होना । अर्थात जीवन का सम्पूर्ण समय एक ही प्रकार से नहीं गुजरता है । जिस प्रकार ऋतु चक्र परिवर्तन के कारण मौसम बदलते रहते हैं, वैसे ही इंसान के भाग्य चक्र में सुख - दुख, अमीरी - गरीबी, ऊंच - नीच, यश - अपयश, जीवन - मरण जैसे मौसम रूपी दिनों का बदलाव आता है।

परिवर्तन = Change [16]

8. इंसान वास्तव में बुराई की ओर आकृष्ट होता है, अपने उस लालच के कारण, जब वह सोचता है कि उसकी चोरी को कोई भी नहीं पाकड़ सकता है । इस प्रकार निरापद तरह के लालच हमारे भीतर बुराइयों का साम्राज्य ही स्थापित कर लेते है । अतः इंसान को यदि बुराई की तलाश करनी है तो उसका आरंभ स्वयं से करना चाहिए । जब हमारे भीतर कोई बुराई नहीं होगी, तो हमें बाहर कोई बुराई नजर नहीं आएगी । क्योंकि वास्तव में हम वही देखते हैं जो हम देखना चाहते है ।

साम्राज्य = Kingdom [16]

****